

गाना बजाना
बंद करो

तुम मुसलमान हो!

About Abde Mustafa Official

Abde Mustafa Official, Ek Team Ahle Sunnat Wa Jama'at Se Jiska Maqsad Quraano Sunnat Ki Khidmat, Ilme Deen Ki Isha'at Aur Islaahe Ummat

Website : abdemustafaofficial.blogspot.com

Email : Abdemustafa78692@gmail.com

Mobile no. : +919102520764 (WhatsApp, Telegram)

Follow us on Facebook, Instagram, Twitter and Subscribe our YouTube Channel
(Search "Abde Mustafa Official" to find us)

Abde Mustafa Social Media Team



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह त'आला का हम पर बहुत बड़ा एहसान है कि उस ने हमें सब से बेहतरीन उम्मत में पैदा फ़रमाया और अपने प्यारे नबी ﷺ को हमारे बीच भेजा ताकि हम अंधेरों से निकल कर रौशनी में आ जायें, नफरत का घर गिरा कर मुहब्बत का महल बनायें, बुराईयों को छोड़ कर अच्छाईयों को गले लगायें और हमारी किसी से दोस्ती या दुश्मनी सिर्फ अल्लाह और उस के रसूल के लिये हो।

हमारे नबी ﷺ जब इस दुनिया में तशरीफ लाये तो हर तरफ़ बुराई, जुल्म और दहशत का अन्धेरा छाया हुआ था, लोगों के अक्राइद, नज़रियात और आमाल का बहुत बुरा हाल था और उन्हें सीधे रास्ते पर लाना, बुराई और अच्छाई की पहचान सिखाना, ज़िन्दगी का असल मक़सद बताना कोई आसान काम ना था लेकिन बहुत ही क़लील वक्रत में आप ﷺ ने तमाम लोगों को एक इस्लाम की रस्सी थमाई और ऐसी मिसाल क़ाइम फरमायी कि इस की नज़ीर देखना तो दूर की बात कोई अल्फ़ाज़ के ज़रिये इस की तारीफ़ बयान भी नहीं कर सकता।

हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ का मुबारक ज़माना बहुत अच्छा और ख़ैर वाला था, इस के बाद सहाबा का ज़माना भी ऐसा ही रहा लेकिन जैसे जैसे वक्रत गुज़रता गया, हुज़ूर अलैहिस्सलाम के ज़माने से दूर होता गया, जिहालत बढ़ने लगी और कई फितनों ने सर उठाना शुरू किया हता कि मौजूदा दौर हमारी नज़रों के सामने है जिस में हम हर दिन नये नये फितनों को देख रहे हैं।

दीगर कई फितनों की तरह एक ये भी है कि हमारे मुआशरे में बेशुमार चीज़ें ऐसी आ गई हैं जो गैरों की हैं और अफसोस की बात ये है कि हम ऐसी चीज़ों को पसंद भी कर रहे हैं।

यहूदियों, नसरानियों, हिन्दुओं और अंग्रेजों के बीच रह कर मुसलमानों पर उन का काफ़ी असर हुआ है। जी हाँ! जब से मुसलमानों ने उन की सोहबत इख्तियार की है तब से हमारे चाल चलन में कसीर तब्दीलियाँ हुई हैं। खाने का तरीक़ा, सोने का तरीक़ा, क़ज़ाए हाजत का तरीक़ा, शादियों का तरीक़ा, हमारे लिबास, घर, खाने, यहाँ तक कि चेहरे की सजावट भी गैरों की तर्ज़ पर है। (अल्लाह रहम फरमायें)

मुसलमानों की एक बड़ी तादाद गाने बजाने जैसी खतरनाक बला के चपेट में है। मुसलमानों ने गाने बजाने को इस क्रदर अपने बीच शामिल कर रखा है जैसे मानो अपना साथी बना लिया हो लेकिन उन्हें ये नहीं पता कि ये साथी उन्हें कहाँ ले कर जा छोड़ेगा!

बहुत अफसोस के साथ ये कहना पड़ रहा है कि बहुत से लोग अब गाने बजाने को बुरा ही नहीं समझते! शादी हो या वलीमा, अक़ीक़ा हो या मेहंदी की रस्म, खतना हो या और कोई महफ़िल, गाने बजाने के बिना तो मुक़म्मल ही नहीं होती और अगर कोई इसे छोड़ दे तो जाहिलों की तरफ से अजीब अजीब ताने दिये जाते हैं जैसे हम सब अच्छी तरह जानते हैं लिहाज़ा बताने की ज़रूरत नहीं।

हमारे शहर में तो कई जगह ये देखा गया और सुनने को मिला कि जो बारात में बाजा लेकर नहीं आता उस की बारात में ये तक कह दिया जाता है कि वो सुन्नी नहीं है। क्या सुन्नियत की पहचान अब गाना बजाना रह गया है?

हम इस निख्यत से कि हमारे मुसलमान भाइयों की इस्लाह हो जाये और उन के दिल में हमारी बात उतर जाये, गाने बजाने के नुक्सानात बयान कर रहे हैं लिहाज़ा गुज़ारिश है कि क़ुरआन व सुन्नत के फरामीन मुलाहिज़ा फरमायें और अल्लाह त'आला से दुआ करें कि वो इस गुनाह से बचने की तौफीक़ अता फरमाये।

अल्लाह त'आला इरशाद फ़रमाता है :

ऐ ईमान वालों! इस्लाम में पूरे दाखिल हो (जाओ) और शैतान के क़दमों पर ना चलो बेशक़ वो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (البقره:208)

देखें! क़ुरआन में अल्लाह त'आला ने बिल्कुल वाज़ेह तौर पर फ़रमाया कि शैतान के क़दमों पर ना चलो क्योंकि बेशक़ वो तुम्हारा खुला दुश्मन है और गाना बजाना शैतान का तरीक़ा है जैसा कि एक रिवायत में है कि नबी -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि शैतान ने सब से पहले नोहा किया और गाना गाया।

(تفسيرات احمدیہ، ص 601 بہ حوالہ گانے بجانے کی ہولناکیاں۔ و فردوس
الاخبار، ج 1، ص 34، حدیث 42 بہ حوالہ ماہنامہ فیضان مدینہ، اپریل 2018)

एक रिवायत में ये भी है कि जब हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अपनी सुरीली आवाज़ में हम्द पढ़ते (यानी अल्लाह की पाकी और तारीफें बयान करते) तो पहाड़ वज्द में आ जाते, परिदे उड़ते उड़ते गिर पड़ते, जानवर जंगलों से निकल आते, पेड़ झूमने लगते, बहता पानी रुक जाता, जंगली जानवर एक-एक महीने तक खाना पीना छोड़ देते और छोटे बच्चे दूध माँगना और रोना छोड़ देते! जब शैतान ने ये सब देखा तो बहुत परेशान हुआ और बाँसुरी और तम्बूरा बनाया और खूब गाया बजाया; इस से हुआ ये कि लोग दो गिरोहों (Groups) में तक्रसीम हो गये जो अच्छे लोग थे वो हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के शैदाई हुये और जो बुरे लोग थे वो शैतान के साथ गाने बजाने लगे।

(کشف المحجوب مترجم، ص 740، 741 بہ حوالہ گانے بجانے کی ہولناکیاں۔ و ماہنامہ فیضان مدینہ، اپریل 2018)

गौर कीजिये! गाना बजाना किस का काम है और खुद से फैसला कीजिये कि क्या हमें मुसलमान हो कर ऐसा काम करना चाहिये?

क्या हमें शैतान के क़दमों पर चलना चाहिये? एक मुसलमान का जवाब हर बार यही होना चाहिये कि नहीं, हरगिज़ नहीं।

गाना सुनने से इन्सान के दिल में निफाक़ भी पैदा होता है चुनाँचि हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने फ़रमाया कि क़हील (फुज़ूल खेल कूद) और गाने की आवाज़ दिल में निफाक़ पैदा कर देती है जिस तरह पानी घास उगा देता है।

(در مختار، ج 5، ص 352 بہ حوالہ فتاویٰ اتر اکھنڈ۔ و فتاویٰ رضویہ شریف، ج 24، ص 84)

इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि गाने बाजे से अपने आप को बचाओ क्योंकि ये हया को कम करते हैं, शहवत को बढ़ाते हैं और गैरत को बरबाद करते हैं और ये शराब के बराबर है, इस में नशे की सी तासीर है।

(تفسير در منشور، ج 6، ص 506 بہ حوالہ ماہنامہ فیضان مدینہ، اپریل 2018)

गाने बजाने के दुनियावी नुकसानात तो अपनी जगह है हीं लेकिन आखिरत में भी इस गुनाह पर शदीद अज़ाब होगा, चुनाँचि नबी -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जो गाने वाले के पास बैठे और कान लगा कर ध्यान से सुने तो अल्लाह त'आला क्रियामत के दिन उस के कानों में सीसा (पिघला के) उन्डेलेगा।

(تاریخ مدینہ دمشق، ج 51، ص 263 بہ حوالہ ماہنامہ فیضان مدینہ، اپریل 2018)

गाने बजाने के और बहुत सारे नुकसानात हैं, जिन में से चंद हम ने बयान किये और अहले अक़ल के लिये इतना ही काफ़ी है और खुलासा यही है कि गाना बजाना हराम है और जहन्नम में ले जाने वाला अमल है जिस से हमें बचना चाहिये।

एक और ज़रूरी बात हम अर्ज़ करना चाहते हैं कि आज कल जो गाने सुने जाते हैं वो आप के ईमान को भी बरबाद कर सकते हैं! मुसलमानों के लिये गौर का मक़ाम है, कहीं ऐसा ना हो कि ये गाने तुम्हें काफ़िर बना दें। (म'आज़ अल्लाह)

अकसर फिल्मी गानों में ऐसे अश'आर होते हैं जिन्हें गुनगुनाने या पढ़ने से इन्सान काफ़िर हो जाता है! सारे नेक अमल बरबाद हो जाते हैं, बीवी से निकाह टूट जाता है और हमेशा के लिये जहन्नम का मुश्तहिक़ हो जाता है! अगर बिना तौबा किये मर जाये तो काफ़िर की मौत मरता है! (म'आज़ अल्लाह) ऐसा इसलिये होता है कि गानों में कुफ़्रिया कलिमात होते हैं और बाज़ तो ऐसे होते हैं कि जिसे "सरीह कुफ़्र" कहा जाता है यानी अगर आप ने वो अश'आर पढ़े और अगरचे आप की निय्यत और अक़ीदा उस शेर के मुताबिक़ ना भी हो तो भी आप काफ़िर हो जायेंगे। हम आप के सामने कुछ मिसालें पेश करते हैं ताकि आसानी से समझ आ जाये।

एक गाने में ये शेर है:

हसीनों को आते हैं क्या क्या बहाने,

खुदा भी ना जाने तो हम कैसे जानें?(म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में साफ़ कहा जा रहा है कि म'आज़ अल्लाह "खुदा भी ना जाने तो हम कैसे जानें" ये जुमला कुफ़्र पर मबनी है क्योंकि इस से अल्लाह के इल्म का इंकार साबित होता है। हालाँकि अल्लाह त'आला दिलों के वो हाल तक जानता है जिसे इन्सान खुद अच्छी तरह नहीं जानता। मुसलमानों! गौर करो कि किस तरह तुम अपनी जुबान से खुशी खुशी अल्लाह की तौहीन कर रहे हो!

ऐसे अश'आर गाने से या गुनगुनाने से इन्सान काफ़िर हो जाता है, उस की बीवी निकाह से निकल जाती है और जितने नेक आमाल किये थे सब बरबाद हो जाते हैं यानी कोई नेकी नहीं बचती।

ये ख्याल रहे कि अगर लोगों की इस्लाह करना मक़सद ना होता तो अभी हम इन गंदे गानों को बयान नहीं करते लेकिन चूँकि हम चाहते हैं कि मुसलमानों को हक़ीक़त पता चले, इस लिये हम यहाँ गानों के कुफ़्रिया अश'आर की निशान देही कर रहे हैं।

एक गाने में ये शेर है :

जितनी प्यारी आँखें हैं, आँखों से झलकता प्यार,

कुदरत ने बनाया होगा फुरसत से तुझे मेरे यार। (म'आज़ अल्लाह)

अल्लाह त'आला मसरूफ़ (Busy) नहीं रहता कि उसे किसी काम को फुरसत निकाल कर करना पड़े। इस का एक ये मतलब भी निकालता है कि अल्लाह त'आला ने जिसे फुरसत से बनाया वो खूबसूरत है और जिसे जल्दी में बनाया वो बदसूरत है। (अस्तग़्फ़िरुल्लाह)

एक गाने में ये शेर है :

फूलों सा चेहरा तेरा, कलियों सी मुस्कान है,

रंग तेरा देखकर, रूप तेरा देख के कुदरत भी हैरान है। (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में भी अल्लाह त'आला के लिये वो अलफ़ाज़ इस्तिमाल किये गये जो उस की शान के लाइक नहीं।

"कुदरत भी हैरान है" इससे ये समझ में आता है कि उसे किसी और ने बनाया है इसीलिये कुदरत हैरान है।

अल्लाह त'आला हमें ऐसे अश'आर सुनने से बचाये।

एक गाने में ये शेर है :

खुदा भी आसमान से जब ज़मीन पर देखता होगा,

मेरे महबूब को किस ने बनाया सोचता होगा! (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में गुस्ताखी की इन्तिहा हो गयी। ये कहना कि "मेरे महबूब को किस ने बनाया सोचता होगा" क्या ज़ाहिर करता है कि किसी और खुदा ने उसे बनाया है? क्या अल्लाह त'आला सोचता है और वोह आसमान से ज़मीन पर देखता है? ये सारे जुमले मुसलमानों के अक्रीदे के खिलाफ हैं लेकिन अफसोस उन मुसलमानों पर जो इन गानों को सुनते और गुनगुनाते हैं।

एक गाने में ये शेर है :

रब ने मुझ पर ये सितम किया है,

सारे ज़माने का गम मुझे दिया है! (म'आज़ अल्लाह)

ये कहना कि "अल्लाह ने मुझ पर सितम किया है" अल्लाह त'आला को ज़ालिम कहना है जो कि सरीह कुफ़्र है। अल्लाह त'आला जो करता है या करेगा वो सब अदल व इन्साफ़ है, उस ने किसी पर जुल्म व सितम नहीं किया और जो उसे ज़ालिम कहे वो काफिर है।

एक गाने में ये शेर है :

मेरी निगाह में क्या बन के आप रहते हैं,

क़सम खुदा की! खुदा बन के आप रहते हैं! (म'आज़ अल्लाह)

यहाँ तो महबूब को खुदा बनाया जा रहा है जो कि कुफ़्र है। इश्के मजाज़ी का भूत गाना गाने वालों पर इस क्रूर सवार हो चुका है कि अपना दीन तक भूल बैठे हैं। मुसलमानों को चाहिये कि गाने बजाने से फौरन तौबा करें और अपने मोबाइल, कम्प्यूटर वगैरा से गानों को मिटा दें।

एक गाने में ये शेर है :

अब आगे जो हो अंजाम देखा जायेगा,

खुदा तराश लिया और बन्दगी भी कर ली! (म'आज़ अल्लाह)

इस में दो कुफ़्र है, एक ये कि खुदा तराश लिया और बन्दगी भी कर ली!

मेरे मुसलमान दोस्तों और भाइयों! क्या आप भी इन बेहूदा गानों को सुनेंगे और गुनगुनायेंगे?

एक गाने में ये शेर है :

सीप का मोती है तू या आसमान की धूल है,

तू है कुदरत का करिश्मा या खुदा की भूल है!

(म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में कहा जा रहा है "खुदा की भूल है" जो कि कुफ़्र है। अल्लाह त'आला भूलने से पाक है, समझ नहीं आता कि एक मुसलमान किस तरह ऐसे अशआर को सुन सकता है।

एक गाने में ये शेर है :

दिल में तुझे बिठा कर, कर लूँगी बन्द आँखें,

पूजा करूँगी तेरी, दिल में रहूँगी तेरे! (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में महबूब की पूजा करने की बात की गई है जो कि कुफ़्र है!

एक गाने में ये शेर है :

हाय! तुझे चाहेंगे,

अपना खुदा बनायेंगे! (म'आज़ अल्लाह)

इसमें भी मख्लूक को खुदा बनाने की बात की गई है जो कि कुफ्र है!

एक गाने में ये शेर है :

दिलों में हो तुम, आँखों में तुम, बोलो तुम्हें कैसे चाहूँ?

पूजा करूँ या सजदा करूँ? जैसे कहो वैसे चाहूँ! (म'आज़ अल्लाह)

इस में भी मख्लूक को पूजने की बात है जो कि कुफ्र है! किसी को चाहने का क्या यही मतलब है कि आप उसे खुदा बना लें और उस को सजदा करना शुरू कर दें? ये गाने आप को किस राह पर ले कर जा रहे हैं, ज़रा गौर करें।

एक गाने में ये शेर है :

सज़ा रब जो देगा वो मन्ज़ूर हम को,

कि अब हम तुम्हारी इबादत करेंगे!(म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में अल्लाह के अज़ाब को हल्का समझा जा रहा है कि जो भी सज़ा मिलेगी वो हमें मंज़ूर है और फिर गैरे खुदा की इबादत का इरादा भी ज़ाहिर किया जा रहा है!

क्या इंसानी जिस्म में ये ताक़त है कि वो अल्लाह के अज़ाब को दावत दे फिर क्या ये जुमला ज़ाहिर नहीं करता कि अज़ाबे इलाही को हल्का समझा जा रहा है। अल्लाह का ख़ौफ़ करें और गाने बजाने से तौबा करें।

एक गाने में ये शेर है :

या रब तूने दिल तोड़ा मेरा किस मौसम में? (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में अल्लाह त'आला पर एतराज़ किया गया है जो कि कुफ्र है।

एक गाने में ये शेर है :

कैसे कैसे को दिया है, ऐसों वैसे को दिया है,

अब तो छप्पड़ फाड़ मौला, अपनी जेबें झाड़ मौला! (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में भी अल्लाह त'आला पर एतराज़ किया गया है कि तूने कैसे कैसे को दिया है और जेबें झाड़ने का लफ़्ज़ अल्लाह त'आला के लिये? (म'आज़ अल्लाह)

एक गाने में ये शेर है :

बेचैनियाँ समेटके सारे जहान की,

जब कुछ ना बन सका तो मेरा दिल बना दिया! (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में जो अलफ़ाज़ हैं "जब कुछ ना बन सका तो मेरा दिल बना दिया" इस से अल्लाह त'आला को बेबस करार दिया गया है जो कि खुला कुफ्र है। क्या लोगों की मत मारी गयी कि ऐसे गानों को सुनते हैं और फिर इतना ही नहीं, शादियों, पार्टियों में बजाते भी हैं।

एक गाने में ये शेर है :

दुनिया बनाने वाले! दुनिया में आकर दिखा,

सदमे सहे जो मैंने तू भी उठा कर देख!(म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में भी कुफ्र है, ये अल्लाह त'आला की तौहीन है!

मुसलमानों! तुम्हारी गैरत को क्या हो गया है? क्यों तुम अब भी गाने सुनते हो?

एक गाने में ये शेर है :

दुनिया बनाने वाले क्या तेरे मन में समाई?

काहे को दुनिया बनाई? (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में अल्लाह त'आला पर एतराज़ किया गया है जो कि कुफ्र है! अल्लाह त'आला जो भी करता है उस में बेशुमार हिकमतें होती हैं अगरचे हमारी अक्ल की रसाई वहाँ तक ना हो सके हमें ये तसलीम करना होगा। अल्लाह त'आला पर एतराज़ करना कि ये क्यों किया, ये नहीं करना था वगैरा कुफ्र है।

एक गाने में ये शेर है :

ऐ खुदा! इन हसीनों की पतली क्रमर क्यों बनाई?

तेरे पास मिट्टी कम थी या तू ने रिश्त खायी? (म'आज़ अल्लाह सुम्मा म'आज़ अल्लाह)

मुसलमानों! तुम्हारे सामने अगर कोई गैर मुस्लिम अल्लाह त'आला की शान में गुस्ताखी करे तो तुम मरने मिटने के लिये तैय्यार हो जाते हो लेकिन ये क्या हुआ कि आज तुम्हारे घरों में ऐसे गाने बजाये जा रहे हैं जिस में खुले आम अल्लाह त'आला की तौहीन की जा रही है और हम उसे सुन रहे हैं।

नौजवानों! तुम्हारे मोबाइल फोन पर इस तरह के सैकड़ों गाने मौजूद हैं जिसे तुम बड़े शौक से सुनते हो।

अल्लाह के वास्ते अपने दिल पर हाथ रख कर सोचो कि तुम क्या कर रहे हो!

एक गाने में ये शेर है : उस हूर का क्या करें जो हज़ारों साल पुरानी है!

(म'आज़ अल्लाह)

इस में जन्नती हूर की तौहीन की गई है और अल्लाह त'आला की किसी नेमत की तौहीन कुफ्र है।

एक गाने में ये शेर है :

तुझ को दी सूरत परी सी, दिल नहीं तुझ को दिया,

मिलता खुदा तो पूछता, ये जुल्म तूने क्यों किया? (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में अल्लाह त'आला को ज़ालिम कहा गया है जो कि कुफ्र है। अल्लाह त'आला मुसलमानों के हालात पर रहम फरमाये।

एक गाने में ये शेर है :

ओ मेरे रब्बा रब्बा! ये क्या गज़ब किया?

जिस को बनाना था लड़की उसे लड़का बना दिया! (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में अल्लाह त'आला पर एतराज़ किया गया है जो कि कुफ्र है।

एक गाने में ये शेर है :

किसी पत्थर की मूरत से मुहब्बत का इरादा है,

परस्तिश की तमन्ना है इबादत का इरादा है! (म'आज़ अल्लाह)

जो शख्स किसी मख्लूक की इबादत करने की तमन्ना ज़ाहिर करे वो उसी वक़्त काफिर हो जाता है। ये कुफ्रिया अशआर हमारे लिये ज़हर से ज़्यादा खतरनाक हैं। इन से खुद भी बचें और दूसरों की भी इस्लाह करें।

एक गाने में ये शेर है :

मुझे बता ओ जहाँ के मालिक! ये क्या नजारे दिखा रहा है?

तेरे समन्दर में क्या कमी थी कि आज मुझ को रुला रहा है। (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में अल्लाह त'आला पर एतराज़ किया गया है जो कि कुफ़्र है।

एक गाने में ये शेर है :

उन की क्या तारीफ़ करूँ मैं?

फुरसत से है रब ने बनाया! (म'आज़ अल्लाह)

इस में ये अलफ़ाज़ "फुरसत से है रब ने बनाया" कुफ़्र है। अल्लाह त'आला इस से पाक है कि वो मशरूफ़ हो और किसी काम के लिये फुरसत का मुहताज हो।

एक गाने में ये शेर है :

ऐ खुदा! बेहतर है ये कि तू छुपा पर्दे में है,

बेच डालेंगे तुझे ये लोग इस चक्कर में हैं!(म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में अल्लाह त'आला के लिये गलत लफ़्ज़ इस्तिमाल किये गये हैं, शर्म का मकाम है कि ऐसे अलफ़ाज़ अल्लाह त'आला के लिये इस्तिमाल किये जाते हैं।

एक गाने में ये शेर है :

अब ये जान ले ले या रब, दो जहान ले ले या रब,

या ईमान ले ले या रब.....या खुदा.....फना फना ये दिल हुआ फना।

(म'आज़ अल्लाह)

क्या कोई मुसलमान ये चाहेगा कि उस का ईमान ले लिया जाये! अगर नहीं तो फिर इन गानों को हम क्यों सुन रहे हैं? इस में ये जुमला "ईमान ले ले या रब" क़ाबिले गौर है। एक मुसलमान के लिये उस के ईमान से बड़ी दौलत क्या हो सकती है। ये गाने आपके ईमान के लिये बहुत खतरनाक हैं लिहाज़ा जितनी जल्दी हो सके संभल जाइये।

एक गाने में ये शेर है :

जब से तेरे नैना मेरे नैनों से लागे रे,

रब भी दीवाना लागे रे! (म'आज़ अल्लाह)

इस गाने में अल्लाह त'आला को भी दीवाना कहा जा रहा है और अल्लाह त'आला को दीवाना कहना कुफ़्र है।

एक गाने में ये शेर है :

मुहब्बत की किस्मत बनाने से पहले,

ज़माने के मालिक तू रोया तो होगा!(म'आज़ अल्लाह)

अल्लाह त'आला इस से पाक है कि रोये और जो ऐसा कहता है वो काफ़िर है। इस किस्म की बातें अल्लाह त'आला के बारे में एक पढ़ा लिखा मुसलमान भी नहीं करेगा लेकिन ये गाने हैं कि आज कई मुसलमान बड़े शौक्र से ये बातें अपनी जुबान पर ला रहे हैं।

एक गाने में ये शेर है :

मैं प्यार का पुजारी, मुझे प्यार चाहिये,

रब जैसा ही सुन्दर मेरा यार चाहिये।(म'आज़ अल्लाह)

प्यार की पूजा करना कुफ़्र है और अल्लाह त'आला की तरह किसी और को कहना भी कुफ़्र है।

एक गाने में ये शेर है :

अगर मिले खुदा तो, तो पूछूँगा खुदाया,

जिस्म मुझे देके मिट्टी सा, शीशे सा दिल क्यों बनाया। (म'आज़ अल्लाह)

इस शेर में भी अल्लाह त'आला पर एतराज़ किया गया है कि "क्यों बनाया" ये कुफ़्र है और जितने भी अशआर हम ने बयान किये, सब में कुछ ना कुछ कुफ़्र है। इन के इलावा लाखों अशआर हैं जिसे लोग बड़े शौक्र से सुनते हैं, हम ने कुछ बयान किये हैं ताकि मुसलमान समझ सकें।

जो इन कुफ़्रिया गानों को दिलचस्पी से सुने या पढ़े वोह काफ़िर हो गया और उस के तमाम नेक आमाल बरबाद हो गये, सारी नेकियाँ खत्म हो गयीं, शादी शुदा था तो निकाह भी गया, मुरीद था तो बैअत भी खत्म और अब उस पर फ़र्ज़ है कि तौबा करे और नये सिरे से कलमा पढ़ कर मुसलमान हो और तजदीदे निकाह भी करे और फिर मुरीद बने।

खलीफा -ए- हुज़ूर मुफ़्ती -ए- आज़म -ए- हिन्द, शारेह बुखारी, हज़रत अल्लामा शरीफुल हक़ अमजदी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि इस तरह के (सरीह) कुफ़्र और बेहूदा अशआर कोई ग़ाये (पढ़े) तो वोह काफ़िर है अगरचे वोह यह कहे कि मेरा ये अक़्रीदा नहीं; कुफ़्र बकने के बाद ये बहाना काम नहीं देगा। इस लिये हर मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है कि वोह इल्मे दीन हासिल करे, कुफ़्र व इस्लाम को पहचाने, ज़रूरियाते दीन व अहले सुन्नत को समझे ताकि ऐसी कोई ग़लती ना हो पाये।

(ملقطاً: فتاوى شارح بخاری، ج 1، ص 258۔ والنظر: فتاوى مرکز تربیت افتا)

जागना है जाग लो अफलाक के साये तले,
हश् तक सोते रहोगे खाक के साये तले।

अल्लाह त'आला हमें तमाम बुराईयों से बचाये और दूसरों को बुराई से रोकने और नेकी का हुक्म देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। (आमीन)

सवाल : अगर कोई मुसलमान इन गानों को गाता है लेकिन उस की नियत और अक़्रीदा वैसा नहीं है जैसा गाने में है तो क्या काफ़िर हो जायेगा और अगर हुआ तो क्यों?

जवाब : सरीह कुफ़्र पर मुश्तमिल ये अशआर पढ़ने से वो ज़रूर दाइरा ए इस्लाम से खारिज हो जायेगा और उस पर तौबा व तजदीदे ईमान फ़र्ज़ है क्योंकि कुफ़्रे सरीह में जहालत का उज़्र क़ाबिले क़ुबूल नहीं है। इसे यूँ समझिये कि ये कुफ़्र एक आग है और आप इस में नियत कर के हाथ डालें या बग़ैर नियत के, दोनों सूरतों में हाथ जलेगा। ऐसा नहीं है कि आप हाथ डालने से पहले ये कहें कि मैं नियत करता हूँ हाथ जलने की और फिर आग में हाथ डाले तो ही जलेगा। इसी तरह कुफ़्र है कि आप ने अंजाने में ही कहा हो लेकिन वो कुफ़्र है। पहली ग़लती तो यही है कि आप ने इल्म हासिल नहीं किया और ये नहीं जाना कि अक़्रीदा क्या है और कौन सी बातें कुफ़्र हैं। वल्लाहु आलम

सवाल : अगर कोई ऐसे गाने सुने जो कुफ्रिया अशआर पर मुश्तमिल ना हो तो क्या वो काफिर हो जायेगा?

जवाब : नहीं, काफिर नहीं होगा लेकिन गाने सुनना नाजाइज़ व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला अमल है, गाने सुनने के बहुत से नुक्सानात है जिन में चंद हमने इस रिसाले में बयान किये हैं। अगर कोई ऐसे गाने सुनता है जिन में कुफ्रिया अशआर नहीं तो भी गुनाहगार होगा और मुमकिन है कि वो कोई ऐसा गाना भी सुन ले जिन में कुफ्रिया अशआर हों और इसे मालूम ना हो या वो तमीज़ ना कर सके। गाने सुनने की किसी तरह इजाज़त नहीं है और फिर ये बड़ी अजीब बात है कि छाँट छाँट कर गाने सुने जाये यानी कुफ्रिया अशआर वालों को अलग किया जाये, ये तो ऐसा है कि हराम को चुन चुन कर खाया जाये।

सवाल : शादी बियाह में गाना बजाना आम हो चुका है, अब इस की रोकथाम कैसे की जाये?

जवाब : शुरूआत अपनी और अपने बच्चों की शादी से की जाये और जिन के यहाँ गाना बजाना होता है उन का बायकॉट किया जाये। जहाँ गाना बजाना देखें वहाँ दावत में शिर्कत ना करें चाहे वो कितना भी करीबी क्यों ना हो। उलमा को भी चाहिये कि ऐसी दावत में बिल्कुल ना जायें और गाने बजाने वालों को जहाँ तक हो सके समझायें और अगर ना समझे तो उन के घर मुकम्मल तौर पर आना जाना बन्द कर दिया जाये चाहे किसी की शादी हो या वफ़ात। ये काम एक क्रमेटी बना कर किया जाना चाहिये जिस में इलाक़े के ज़िम्मेदारान मिल बैठ कर क़ानून बनायें और गाने बजाने वालों पर सख्ती करें क्योंकि नरमी से हर काम नहीं होता।



हमारे दीगर रिसाले

अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना
गैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तेमाल
शबे मेराज हुज़ूर गौसे पाक
शबे मेराज नालैन अर्श पर
बहारे तहरीर (पांच हिस्से)
गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो!
(ऊर्दू) (रोमन उर्दू)
क्या हज़रते बिलाल का रंग काला था?
हज़रते उवैस करनी के दांत
अल्लाह त'आला को उपरवाला या मिया कहना कैसा?
मुकर्रिर कैसा हो?
फुर्रई इख़्तलाफ़ात रहमत हैं
और भी कई रिसालों पर काम जारी है।

Abdemustafaofficial.blogspot.com